'वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट'–आत्मनिर्भर स्टार्टअप संस्कृति

प्रोफेसर वीरेन्द्र सिंह
प्राचार्य
दिगम्बर जैन कॉलिज, बड़ौत
बागपत, उ0प्र0, भारत
virendrasingh1839@gmail.com

सारांशिका

हम जिस दुनिया में रहते हैं, वह लगातार बदल रही है। स्वस्थ सामजंस्य हेतु हमारे विचारों का उन्मुक्तीकरण आवश्यक है। बात केवल बड़े बदलावों की नहीं है। कुछ नए तरह के रंग एवं स्वाद, परिधान या फिर विभिन्न संस्कृति राह के लोगों से मिलने–जुलने की छोटी–छोटी कोशिशें भी हममें बहुत कुछ बदलाव लाती है। स्वंय को नए अनुभवों तक ले जाना भी हमें विकास की राह पर अग्रसर करता है। आशा की जा रही है कि वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट के द्वारा विश्वविद्यालयों एवं कॉलिजों से निकलने वाले लगभग 25 लाख युवाओं को रोजगार मिलेगा। जिले के छोटे, मध्यम और परम्परागत उद्योगों का विकास करने के उद्देश्य से यू0पी0 में 24 जनवरी 2018 को माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के द्वारा शुरू की गई। इस योजना को धरातलीय स्तर पर क्रियान्वयन हेतु स्टार्टअप इंडिया भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है।

इसका उद्देश्य देश में स्टार्टअप एवं नये विचारों को आकार देने हेतु बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर उत्पन्न करना है। 'वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट'–आत्मनिर्भर स्टार्टअप संस्कृति की एक इकाई है जो नये उत्पादों या सेवाओं के नवाचार, विकास एवं व्यवसायीकरण की दिशा में काम करती है। राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में बढ़ती शिक्षित बेरोजगारी की समस्या का निदान करके राष्ट्र की विशाल मानव शक्ति को अभिशाप में न लेकर उन्हें एक उपयोगी धरोहर के रूप में परिवर्तित करना आवश्यक है। बढ़ती आबादी के दबाव और रोजगार सृजन के उद्देश्य के सन्दर्भ में स्टार्टअप इंडिया भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है। जनसंख्या में विश्व में दूसरे नम्बर के देश भारत के लिए युवा आबादी गेमचेंजर साबित हो सकती है। सशक्त राष्ट्र के निर्माण में युवा सक्रिय भूमिका निभा सकते है और इसका परिणाम देती है हमारी देश को पुल्कित–पल्लवित होती स्टार्टअप संस्कृति।

मुख्य शब्द : आत्मनिर्भर, प्रौद्योगिकी, बौद्विक सम्पदा, व्यावसायीकरण, स्टार्टअप, नवाचार, नये उत्पाद।

प्रस्तावना : डिजिटल तकनीक का प्रमुखता से उपयोग करते स्टार्टअप रोजगार सृजन भी कर रहें हैं। हमारे युवा स्वावलंम्बन की सफल कहानी लिख रहे हैं। सरकार की तरफ से भी युवाओं को रोजगार के काबिल बनाने के प्रयास जारी हैं। ई–कॉमर्स क्षेत्र ने भी अधिक समृद्वि व रोजगार की आस जगाई है। यह इकाई प्रौद्योगिकी या बौद्विक सम्पदा से प्रेरित नये उत्पादों या सेवाओं के नवाचार, विकास, प्रविस्तारण या व्यवसायीकरण की दिशा में काम करती है। मेक इन इंडिया पहल ने शिक्षित युवा, मीडिया का वर्चस्व, उच्च इंटरनेट और मोबाइल जैसे ड्राइवर ने भारत में स्टार्टअप क्रान्ति के अवसर बनाये हैं। वर्तमान पीढ़ी स्टार्टअप संस्कृति के प्रति आस जगाती प्रतीत हो रही है। स्टार्टअप इंडिया की घोषणा 16 जनवरी 2016 को भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा की गई थी। स्टार्टअप का मुख्य उद्देश्य स्वयं का मालिक बनकर दूसरों के लिए रोजगार उत्पन्न करना है। जिससे कि देश के नवाचार और ईकोसिस्टम को बढ़ावा मिल सकेगा। स्टार्टअप का अर्थ, देश के युवाओं को बैकों के माध्यम से पैसा प्रदान करना जिससे उनके व्यवसाय की शुरूआत सुदृढता के साथ हो सके। जिससे वह भारत में अधिक रोजगारोन्मुख हो सके और वह अपने नये अभिनव विचारों को सही दिशा में उपयोग कर सके। स्टार्टअप के नाम पर ही दृष्टिपात किया जाए तो हमें स्पष्ट हो जाता है कि किसी कार्य का शुभारम्भ हो रहा है। जिसमें कुछ व्यक्ति मिलकर अपने–अपने कौशल और विशेषता लेकर आते हैं और स्टार्टअप आइडिया पर काम करते हैं कि किस प्रकार से हम एक यूनिक प्रोडक्ट और सर्विस प्रदान कर सकते हैं जिससे कि स्टार्टअप की सफलता हेतु नियमित रूप से विशेष व्यक्ति वीरता के साथ–साथ चलने के रूप में देखा जाना अपेक्षित है। जब व्यक्ति अपने नवाचारों से ओतप्रोत विचारों को मूर्त रूप देने हेतु व्यूह रचना निर्मित करता है तो उसका ध्येय उस नवाचार में सफलता प्राप्त करना भी होता है। जोकि व्यक्ति की रूचि एवं जूनून तथा प्राप्त संसाधनों पर आधारित होता है। जिनके पास जीवन शैली के अनुभव एवं पृष्ठभूमि है उन्हें अवरोधनों का सामना कम करना पड़ता है। एक समावेशी प्रवृत्ति के आधार पर समावेशी नेतृत्व एवं कर्मचारियों के साथ विश्वास की डोर बंधी हो। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता भी इसी विश्वास पर अवलम्बित है। स्टार्टअप जमीन से निर्मित होते है और परिपक्व होने हेतु समय एवं निवेश की आवश्यकता होती है।

स्टार्टअप संस्कृति के चरण : शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे अनुसंधानों की गुणवत्ता व विविधता में सुधार करके अधिगम के क्षेत्र में नवाचारों को प्रस्तुत करना होगा। इन सभी चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करके एवं शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन करके ही शिक्षा को राष्ट्रीय विकास के शक्तिशाली साधन के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। ऐसा ही प्रयास स्टार्टअप संस्कृति द्वारा सम्भव है। इसके मुख्य चरण हैं कि समस्या को पहचाना, समस्या के सन्दर्भ में अपने अनुभव देखना, अनुभव के आधार पर समाधान खोजना, समाधान का विस्तार क्षेत्र समाज के किस वर्ग पर है और इसी श्रृंखला में अपने विचारों, नवाचारों से आइडिया

ड्रीम टीम की तलाश करना एवं स्टार्टअप करना होता है। स्टार्टअप हेतु आपके पास एक अच्छी टीम का होना अति आवश्यक है जिससे आप स्वयं भी कार्य में रूचि एवं संतोष अनुभव कर सकें। जिससे कि कार्य में सफलता सुनिश्चित हो सकें–

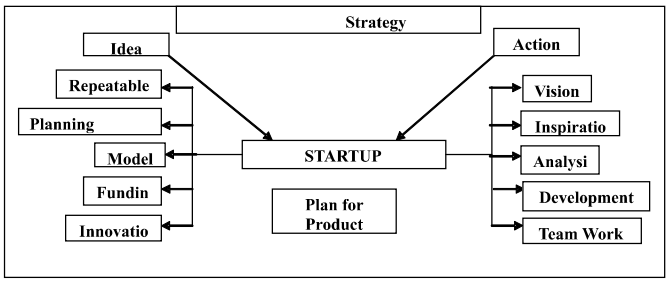

स्टार्टअप के प्रकार : विगत वर्ष कोविड संक्रमण के कारण कई उतार–चढ़ाव से व्यतीत हुआ। भारत में बहुत से व्यवसायियों ने सफलता प्राप्त की तो कई धरातलीय अंचल में समा गये। तभी से भारत का दर्शन परीक्षण के आधार पर स्टार्टअप का समर्थन करता है क्योंकि इसमें कम लागत, कुशल श्रम, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय निवेशकों से धन और विकास के अवसर हैं। देश को अधिक स्टार्टअप यूनिकॉर्न मिल रहें हैं। जिसमें हेल्थटेक, सोशल कॉमर्स, फाइनेंस और अन्य क्षेत्रों की कंपनियाँ भी शामिल हैं। स्टार्टअप अविश्वनीय रूप से क्रियान्वियत है और अपनी पहुँच और विस्तार के अवलम्बन खोज रहे हैं। स्टार्टअप को मुख्यतः तीन रूपों में वर्णित कर सकते हैं–

1. लाइफस्टाइल स्टार्टअप जीवन शैली आधारित : एक ऐसा व्यवसाय जिससे एक विशेष जीवन शैली का अनुभव लिया जा सके। ये उद्यम संस्थापक के कौशल, व्यक्तित्व, ऊर्जा और संपर्कों पर अधिक निर्भर करते हैं। इनोवेशन के अन्तर्गत जहाँ नई प्रौद्योगिकियां एक आश्चर्यजनक रूप में अंकुरित होती हैं, जहाँ पूंजी, विशेषता और प्रतिभा के सम्बन्ध नए उद्योगों के विकास और व्यापार करने के नए तरीकों को बढ़ावा देते हैं। ऐसे स्टार्टअप ज्ञान–विज्ञान और प्रसार केन्द्रों के रूप में नवाचारों को बढ़ावा देते हैं और कंपनियों को युवा ऊर्जा के रूप में मूल्यवान पृष्ठभूमि विशेषज्ञता और कुशल श्रमिक भी प्रदान कर सकते हैं। विश्वविद्यालय एवं शैक्षिक अनुसंधान केन्द्र रचनात्मकता, प्रयोग, जोखिम और व्यावसायिक सफलता की उड़ान को स्वीकृति प्रदान कर उधमशीलता संस्कृति को सुदृढ करते हैं जो समर्थन, सहयोग, मूल्यों और नेटवर्किंग के अवसर पर आधारित थे। जैसे–ब्लॉगिंग, फोटोग्राफी, लेखन, शिक्षण, प्रशिक्षण, खाना बनाना, ब्यूटीक, सैलून, पार्लर आदि। यदि आप अपनी पंसद का जीवन व्यतीत कर लाभ कमाने वाले व्यक्ति हैं तो आपका लाइफस्टाइल स्टार्टअप हैं। जैसे–वॉश बाक्स, एम.एम.एस आधारित सेवा, स्मार्टफोन एप इत्यादि। इस प्रकार जिन लोगों के शौक हैं और जो अपने जूनून पर काम करने को उत्सुक हैं वे अपना लाइफ स्टार्टअप बना सकते हैं। जैसे– सिंगर, डांसर, कुक आदि सिखाने और पैसे कमाने हेतु सक्रिय रूप से ऑनलाइन स्कूल खोल सकते है।

2. लघु व्यवसाय स्टार्टअप : लघु व्यवसाय स्टार्टअप छोटे व्यवसाय हैं। जिनके बड़े लक्ष्य नहीं होतें। लेकिन जीवन को आरामदायक बनाने हेतु प्रौद्योगिकी हर व्यवसाय में अभिन्न भूमिका का निर्वहन करती है। चाहे वह कितना भी छोटा या बड़ा क्यों नहीं है। जैसे– छोटे व्यवसायी को उपभोक्ता एप की जरूरत नहीं है अगर आप विस्तार चाहते हैं तो विज्ञापन एवं वेबसाईट की आवश्यकता होगी। जिनसे ग्राहक की पहुँच होगी ऐसे में ऑनलाइन भुगतान एवं शॉपिंग हेतु भी एप की आवश्यकता हेतु स्टार्टअप किया जा सकता है। स्ववित्त पोषित ये व्यवसाय अपनी गति से बढ़ते हैं जैसे– किराना स्टोर, हेयर ड्रेसर, बेकर, ट्रैवल एजेंन्सी आदि इसके उदाहरण प्रिटिंग, पैकेजिंग, कृषि उत्पाद आदि। ये पहल उद्योगों के लिए युवाओं को अपना व्यवसाय स्थापित करने के लिए स्टार्टअप के लिए सीधे नेटवर्क बनाने में मदद करेगी। देश के अत्यधिक कुशल और प्रतिभाशाली युवा इससे लाभान्वित हो सकेंगे। इन कार्यक्रम के सफल प्रक्षेपण के लिए आई.आई.टी, एन.आई.टी और आई. आई.एम के संपर्क की जरूरत है।

3. स्केलेबल स्टार्टअप : ये देश में उद्यमशीलता और रोजगार के अवसरों को सृजन करने में भी युवाओं को प्रोत्साहित करेगा जोकि भारत के विकास के सन्दर्भ में लिया गया बहुत बड़ा कदम है। ये स्टार्टअप देश को नये ट्रैक पर लाने के लिए जरूरी है। प्रौद्योगिकी कंपनियों में काफी अवसर एवं संभावनाएं होती हैं इसीलिए वे वैश्विक पटल पर आसानी से पहचान बना लेती है जैसे– Google, Uber, Ola, Face book, Twitter, Amazon आदि हैं। स्टार्टअप में अच्छे कर्मचारियों को नौकरी पर रखते हैं और अपने विचारों व उत्पाद को नई उड़ान देते हैं। बड़ी कंपनियों में ग्राहकों की प्राथमिकताएं, तकनीकी, प्रतिस्पर्धा के कारण समय के अनुसार बदलते रहते हैं। **दिगम्बर जैन कॉलिज, बड़ौत जनपद बागपत में भी वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट को प्रोत्साहन देने हेतु रोजगार मेलों का आयोजन किया जाता रहा है।** जिसमें ये कॉलिज छात्र–छात्राओं की प्रतिभा के अनुसार परिणामतः वे नित नवीन उत्पादों के डिजाइन करते हैं जो आधुनिक जरूरतों पर आधारित होते हैं। युवा नये रास्ते नई सोच रखते हैं। अतः उनको स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा देने हेतु प्रोत्साहित करना भी आवश्यक है।

भारत में बदलता आत्मनिर्भरता का दायरा

वर्ष	निर्भरता दर
2011	64.6%
2021	55.7%
2031 अनुमान	54%

2031 तक 54% निर्भरता दर होने का अनुमान है। अर्थात् सौ कमाने वाले लोगों पर कुल 54 बच्चे–बुजुर्ग ही निर्भर रहेंगे। पिछले एक दशक में देश में कामकाजी जनसंख्या में वृद्वि हुई है। वर्ष 2011 में यह करीब 65% थी जबकि 2021 में 55% रह गई। कामकाजी जनसंख्या में 15 से 59 वर्ष आयु वाले सम्मिलित किये जाते हैं।

इस प्रकार अन्य रूप जैसे– सामाजिक स्टार्टअप, बड़े बिजनेस

स्टार्टअप, खरीदने योग्य स्टार्टअप, शिक्षण, स्वास्थ्य आदि द्वारा ऑनलाइन व्यवसाय विकसित कर सकते है।

भारत में स्टार्टअप्स की चुनौतियाँ : भारत में स्टार्टअप को कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है जैसे नौकरशाही, प्रतिस्पर्धा, कुशल श्रमिकों की कमी, धन का अभाव, कुशल योजना की कमी इत्यादि।

1. धन की कमी।
2. कुशल प्रतिभा की कमी
3. उच्च प्रतिस्पर्धा
4. नियामक बाधाएँ : जैसे कानून, लाइसेंस, परमिट, उच्च कर आदि।
5. खराब बुनियादी ढाँचा
6. बाजार की समझ का अभाव,
   प्रबन्धन एवं नेतृत्व के मुद्दे,
   आर्थिक और राजनीतिक अस्थिरता

स्टार्टअप्स की चुनौतियों का सामना हम वैश्वीकरण और भूमंडलीकरण और उद्यमिता के साथ ..... कर सकते है। वैश्वीकरण तकनीकी नवाचारों की सुविधा देता है जोकि सफलता की कुँजी है और इसके लिये बड़े सपने देखना महत्वपूर्ण है। एक स्वस्थ प्रतियोगिता के नये कौशल के विकास के साथ ही रचनात्मक रू‍प से अग्रसर होने में मदद करती है और प्रतिभा का समर्थना करती है। चुनौतियाँ का अर्थ है अवसर। अवसर सुनहरे भविष्य का निर्माण करते है।

निष्कर्ष : उपरोक्त संदर्भ में कहा जा सकता है कि नई शिक्षा नीति 2020 और आस जगाती स्टार्टअप्स संस्कृति नई संभावनाओं और चुनौतियों के लिए द्वार खोलते हैं जो आपको निश्चित रूप से कार्य के अवसर देती है। जिससे कार्यों की विविधता के कारण रचनात्मक वातावरण निर्मित होता है। आपके विचार एवं कार्यों की विशेषतज्ञता के कारण नए दृष्टिकोण उत्पाद और सेवा स्वागत योग्य होते हैं। जोकि आपको आवश्यक कौशल और ज्ञान की नींव बनाने, अनुभव प्राप्त करने व उत्तरदायित्व निर्वहन योग्य बनाते हैं। इसके लिए आप अच्छा विचार खोजे, योजना विकसित करें, पर्याप्त पूंजी की व्यवस्था बनाये, सही टीम चुने स्थान और साइट का चयन करें डिजिटलीकरण हेतु तकनीकी का प्रयोग करें। आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अधिकांश स्टार्टअप्स के अवसर तकनीक एवं गैर–पारंपरिक क्षेत्रों में भी है। जैसे कि सॉफ्टवेयर और प्रौद्योगिकी, विपणन और विज्ञापन, स्वास्थ्य देखभाल, बीमा, शिक्षा, रियल एस्टेट, पर्यावरण और ऊर्जा, खुदरा और ई–कॉमर्स, ब्लॉक चैन और क्रिप्टो करेंसी आदि। इस प्रकार स्टार्टअप्स संस्कृति उन व्यवसायों के लिए एक अच्छा अवसर हैं जो बाजार में खिलना चाहते है। स्टार्टअप्स की लचीली, दक्ष और नवोन्मेषी संस्कृति नौकरी चाहने वालों के लिये एक आकर्षक अवसर प्रदान करती है। कर्मचारी भी स्वायन्तता और कार्य जीवन सन्तुलन को वरीयता देते है। जैसे–बढ़ने की अवसरों की प्रचुरता, एक गैर श्रेणीबद्व कार्य संस्कृति उद्यमशीलता को अनुभव के अवसर, सोचने के नये तरीके अपनाना, अपने काम की पहचान रूचि के आधार पर करना एवं स्वामित्व और नेतृत्व की भूमिका निभाने के अवसर आपकी कड़ी मेहनत की सराहना होने की संभावना अधिक होती है। हम हमेशा ऐसे ही युवाओं की तलाश में रहते है जो स्वप्रेरित हो और तेजी से व्यवस्था का हिस्सा बनना पसन्द करते हो।

हमारी दुनिया तेजी से बदल रही है। परिवर्तन हेतु नवाचार आते हैं। स्टार्टअप्स नए विचारों को जीवन में लाने का परिणाम है क्योंकि वे लोगों के जीवन को सकारात्मक रूप से बदलते हैं। उनकी समस्याओं का समाधान कर दैनिक जीवनशैली को सरल व आरामदायक बनाते हैं।

सन्दर्भ सूची :

1. अग्रवाल आंकाक्षा 2017 भारत में स्टार्टअप के सामने आने वाली समस्याएं एवं समाधान।
2. भारत फाइलिंग रिर्पोट– 2016 भारत में स्टार्टअप के सामने चुनौतियां।
3. Christopher - (2020) स्टार्टअप संस्कृति।
4. पीटर वैन प्ब्रेन – 2015 स्टार्टअप वर्कशाप प्रैक्टीकल
5. प्लै लौकनर– 2021–2022 में प्रयास करने के लिए 40 स्टार्टअप विचार
6. https://www.bafM;k- सरकार. भारत–स्टार्टअप इंडिया–एक्ट
7. https://kaisehindime.com
8. http://score.org-simple steps for starting young business-
9. mygreatleauming.com-top 10 startups
10. http://sendpluse.com-LVkVZvi D;k gS\
11. http://www.ringcentral.com-blog
12. www.livehindustan.com
13. www.dresma.ai,working-in-a-star
14. KEY_Challenges and opportunities for Indian STARTUPS and ENTREPRENEURS the CEO Magazine.